

जहणजोगट्टाणजीवपमाणेण सव्वदब्बे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणिकालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— एककम्हि जवमज्जे जदि जवमज्जहेट्टिमअण्णोण्णम्भत्थरासिमेत्तजहणजोगट्टाणजीवा लब्भन्ति तो किञ्चूणतिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्जेषु किं लभामो त्ति जवमज्जस्स जवमज्जं सरिसमिदि अवणिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा किञ्चूणतिण्णिगुणहाणीसु गुणिदासु असंखेज्जगुणहाणीयो उप्पज्जन्ति । तासि संदिट्ठी । ११ । एदेण सव्वदब्बे भागे हिदे जहणजोगट्टाणजीवा होति । १६ ।।

बिदियजोगट्टाणजीवपमाणेण सव्वदब्बे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुण-  
हाणिट्टाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— जहणजोगट्टाणजीवभागहारं  
विरलिय सव्वदब्बं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि जहणजोगट्टाण-  
दब्बं होदि । पुणो एदम्हादो बिदियणिसेगो एगपक्खेवेणाहिओ त्ति तेण सह  
आगमणट्ठं भागहारपरिहाणी कीरदे । तं जहा— एदिस्से विरल गाए हेट्टा एगगुण-  
हाणिं विरलिय जहणजोगट्टाणदब्बं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगप-  
क्खेवपमाणं पावदि । ते घेत्तूण उवरिमरूवधरिदजहणजोगट्टाणजीवेषु पक्खित्तेसु बिदि-  
यजोगट्टाणजीवपमाणं होदि रूवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तट्टाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च

जघन्य योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यका अपवर्तन करनेपर वह असंख्यात गुणहानियोंके कालसे अपवर्तित होता है । यथा— एक यवमध्यमें यदि यवमध्यकी अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिकी संख्या प्रमाण ( १६×८ = १२८ ) जघन्य योगस्थानके जीव पाये जाते हैं तो कुछ कम तीन गुणहानि प्रमाण यवमध्योंमें क्या प्राप्त होगा; इस प्रकार एक यवमध्य दूसरे यवमध्यके समान होनेसे इन दोनों गुणकोंको निकालकर अन्योन्याभ्यस्त राशिसे कुछ कम तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर असंख्यात गुणहानियां उत्पन्न होती हैं । उनकी सदृष्टि  $\frac{1}{2} \times = \frac{1}{2}$  । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थानवर्ती जीव होते हैं  $१४२२ \div \frac{1}{2} = १६$  ।

द्वितीय योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह असंख्यात गुण-  
हानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा— जघन्य योगस्थानके जीवोंके भागहारको विरलित  
कर सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन एक एकके प्रति जघन्य योगस्थानका द्रव्य प्राप्त  
होता है । फिर इससे द्वितीय निषेक चूँकि एक प्रक्षेप अधिक है अतः उसके साथ जघन्य यो गस्थान-  
नका द्रव्य लानेके लिये भागहारको कम करते हैं । यथा— इस विरलनके नीचे एक गुणहानिको  
विरलित कर उसपर जघन्य योगस्थानके द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्रति एक  
एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । उनको ग्रहण कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति  
प्राप्त हुए जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंमें मिला देनेपर द्वितीय योगस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण होता  
है और एक अधिक अधस्तन विरलव प्रमाण स्थान जाकर एक रूपकी हानि प्राप्त होती है । इस

लब्धदि । एवं पुणो पुणो कादब्धं जाव उवरिमविरलरणरासिधरिदसब्धजीवा बिदिय-जोगट्टाणजीवपमाणं पत्ते त्ति ।

एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा— रूवाहियगुणहाणिमेत्तद्वाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी उवरिमविरलणाए लब्धदे तो किंचूणतिगुणणोणब्धत्थरा-सिमेत्तउवरिमगुणहाणिविरलणाए केत्तियाणि परिहीणरूवाणि लभामो त्ति रूवा-हियगुणहाणीए  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  उवरिमविरलणं खंडिय लद्धे तत्थेव अवणिदे बिदियजोगट्टाणजीवा-णमवहारो होबि । तस्स संदिट्ठी  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  ।

प्रकार उपरिम विरलन राशिको प्राप्त हुए सब जीवोंके द्वितीय योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको प्राप्त होने तक बार बार करना चाहिये ।

अब यहां कम हुए अंकोंका प्रमाण कहते हैं । यथा— एक अधिक गुणहानि प्रमाण स्थान जाकर उपरिम विरलनमें यदि एक रूपकी हानि प्राप्त होती है तो कुछ कम तिगुणी अन्योन्याभ्यस्त राशि प्रमाण उपरिम गुणहानिविरलनमें कितने परिहीन रूप प्राप्त होंगे, इस प्रकार रूपाधिक गुणहानिसे उपरिम विरलनको खण्डित कर लब्धको उसीमेंसे कम कर देनेपर द्वितीय योगस्थानके जीवोंका अवहार होता है । उसकी संदृष्टि— $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  ।

विशेषार्थ— आशय यह है कि द्वितीय योगस्थानके जीवोंकी संख्या २० है । इसका कुल योगस्थानवर्ती जीवराशि १४२२ में भाग देनेपर  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  आते हैं । यही कारण है कि इस द्वितीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण लानेके लिये इतना अवहारका प्रमाण बतलाया है । प्रथम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जो  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  अवहारका प्रमाण बतला आये हैं उसमेंसे  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  घटानेपर दूसरे योगस्थानकी संख्या लानेके लिये भागहारका प्रमाण होता है ।

प्रथम योगस्थानकी जीवराशि लानेके लिये भागहार  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  ; सब जीव राशि १४२२ ; गुणहानि आयाम ४ ; प्रक्षेप ४ ; प्रथम योगस्थानकी राशि १६ ;

अधस्तन विरलन

४ ४ ४ ४ = १६ प्रथम योगस्थान राशि

१ १ १ १ = ४ गुणहानि आयाम

उपरितन विरलन

४ ४ ४ ४

१६ १६ १६ १६      १६ १६ . . . . .

१ १ १ १      १ १ . . . . .  $\textcircled{\text{७}}^{\text{१}}^{\text{१}}$  स्थान

तदियजोगट्टाणजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणिट्टा-  
 गंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— पुव्वविरलणाए हेट्टा गुणहाणिदुभागे  
 विरलणेदूण उवरिमविरलणपढमरूवधरिदजहण्णजोगट्टाणजीवणिसेगं समखंडं करिय  
 दिण्णे विरलणरूवं पडि दो दो पक्खेवा पावेति । तत्थ एगरूवधरिदमुवरि बिदिय-  
 रूवधरिदम्मि दिण्णे तदियणिसेगपमाणं होदि । एवं हेट्टिमसव्वरूवधरिदेसु परिवा-  
 डीए पविट्ठेसु एगरूवपरिहाणी होदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे एगरूवपरिहाणी  
 होदि त्ति कट्टु तेसिं परिहाणिरूवाणमागमणविहाणं वुक्खवे— उवरिमविरलणम्मि  
 रूवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से  
 उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति । रूवाहिय ३गुणहाणिदुभागेण  
 किच्चूणण्णोण्णद्वभत्थरासिमेत्त-तिसु गुणहाणीसु ओवट्टिदासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-  
 भागो आगच्छदि । तं तत्थेव अवणिदे तदियणिसेगभागहारो होदि । तस्सेसा संदिट्ठी

७११  
१२

यहां ५ स्थान जाकर एककी हानि हुई है इसलिये  $\frac{७११}{१०}$  स्थान जानेपर  $\frac{७१०}{१०}$  की हानि होगी । अतः  $\frac{७११}{१०} - \frac{७१०}{१०} = \frac{३९९९-७११}{१०} = \frac{७११}{१०}$  द्वितीय स्थानकी संख्या लानेके लिये भागहार ।

तृतीय योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर असंख्यात गुण-  
 हानिस्थानान्तर कालसे अपहृत होता है । यथा— पूर्व विरलनके नीचे गुणहानिके द्वितीय  
 भागका विरलन कर उपरिम विरलनके प्रथम अंकके प्रति प्राप्त जघन्य योगस्थानवर्ती जीव-  
 निषेकको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति दो दो प्रक्षेप प्राप्त होते हैं ।  
 वहां अधस्तन विरलनमें एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको ऊपरके विरलनमें द्वितीय अंकके प्रति  
 प्राप्त राशिके ऊपर देनेपर तृतीय निषेकका प्रमाण होता है । इस प्रकार अधस्तन विरलनके  
 सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंके क्रमसे प्रविष्ट हो जानेपर एक अंककी हानि होती है । इस  
 प्रकार पुनः पुनः करनेपर एक एक अंककी हानि होती है, ऐसा मानकर उन हीन अंकोंके  
 लानेकी विधि कहते हैं— एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि उपरिम  
 विरलनमें एक अंककी हानि पायी जाती है तो पूरे उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि  
 प्राप्त होगी, इस प्रकार एक अधिक गुणहानिके द्वितीय भागसे अन्योन्याभ्यस्त राशि प्रमाण  
 कुछ कम तीन गुणहानियोंके अपवर्तित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग आता है ।  
 उसको उसी उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर तृतीय-निषेकका भागहार होता है । उसकी  
 यह संदृष्टि है  $\frac{७११}{१२}$  ।

विशेषार्थ— यहां तृतीय योगस्थानके जीवोंका भागहार प्राप्त करना है । साधा-  
 रणतः यह भागहार १४२२ में २४ का भाग देनेसे प्राप्त हो जाता है । पर प्रथम

पुणो तिरुवाहियपुव्वभागहारस्स तिभागेण उवरिमविरलणमोवट्टिय लद्धे तत्थेव अवणिदे चउत्थणिसेयभागहारो होवि । तस्स संदिट्ठी  $\left| \begin{array}{c} ७ \\ १ \\ ४ \end{array} \right|$  । एवमव-  
णयणरूवाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होदूण गच्छमाणाणि केत्तिय-  
मद्धानमुवरि गंतूण पलिदोवमपमाणं पावेति स्ति वुत्ते वुच्चदे - किच्चूणत्तिगुणजव-  
मज्झहेट्ठिमअण्णोण्णवभत्थरासिणोवट्टिदपलिदोवममेत्तद्धानं सादिरेगमुवरि चडिदे  
परिहाणिरूवाणं पमाणं पलिदोवमं होवि । एत्थ संदिट्ठि ठविय सिस्साणं पडिवोहो  
कायव्वो । एत्थुवउज्जंती गाहा-

अवहारेणोवट्टिदअवहरणिज्जम्मि जं ह्वे लद्धं ।

तेणोवट्टिदमिट्ठं अहिए  लद्धीए अद्धानं ॥ ५ ॥

योगस्थानके भागहारमेसे किस प्रक्रियासे कितना कम करनेपर यह भागहार होगा यही विधि  
यहां बतलाई गई है । जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ और तृतीय योगस्थानके  
जीवोंकी संख्या २४ है, इसलिये जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्याके लानेकेलिये १४२२  
संख्याका जो भागहार बतलाया है उससे यह भागहार एक तिहाई कम हो जायगा । इसीसे  
मूलमें एक अधिक अघस्तन विरलन प्रमाण स्थान जानेपर उपरिम विरलनमें एक स्थानकी  
हानि बतलाई गई है । इस प्रकार तृतीय स्थानका भागहार  $\frac{१६}{३}$  प्राप्त होता है । इसका भाग  
१४२२ में देनेपर योगस्थानके तृतीय स्थानके जीवोंकी संख्या २४ लब्ध आती है ।

पुनः तीन अधिक पूर्व भागहारके तृतीय भागसे उपरिम विरलनको अपवर्तित कर  
लब्धको उसीमेंसे कम करनेपर चतुर्थ निषेकका भागहार होता है । उसकी संदृष्टि-  $\frac{१६}{३}$  है ।  
इस प्रकार उत्तरोत्तर हीन किये जानेवाले अंक पत्योपमके असंख्यातर्वे भाग मात्र होकर  
जाते हुए कितने स्थान ऊपर जाकर पत्योपमके प्रमाणको प्राप्त करते हैं ऐसा पूछनेपर कहते  
हैं - कुछ कम तिगुणे यवमध्य और अघस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिसे अपवर्तित पत्योपम मात्र  
स्थानोंसे कुछ अधिक स्थान ऊपर चढ़नेपर घटाये जानेवाले अंकोंका प्रमाण पत्योपम होता  
है । यहां संदृष्टि स्थापित कर शिष्योंको प्रतिबोध कराना चाहिये । यहां उपयुक्त गाथा-

भागहारका भज्यमान राशिमें भाग देनेपर जो लब्ध आता है उससे इष्टको  
भाजित करनेपर लब्धिके अधिक स्थान प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

एवं गंतूणं विदियदुगुणवड्डिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे जहण्णजोगट्टाणजीवभागहारस्स दुभागेण अवहिरिज्जदि । कुदो ? जहण्णजोगट्टाण-जीर्वेहितो एत्थतणजीवाणं ? दुगुणत्तुवलंभादो । एदस्स संदिट्ठी  $\left[ \frac{9}{2} \right]$  । संपहि तदणंतरजोगट्टाणजीवपमाणेण अवहिरिज्जमाणे  $\otimes$  असंखेज्जगुणहाणिट्टाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । णवरि तदणंतरवदिककंतअवहारकालादो संपहिय अवहारकालो विसेसहीणो । को विसेसो  $\otimes$  ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे । तस्स संदिट्ठी  $\left[ \frac{9}{2} \right]$  । तत्थतणतदियणिसेयभागहारसंदिट्ठी  $\left[ \frac{9}{2} \right]$  । चउत्थणिसेगभागहारसंदिट्ठी  $\left[ \frac{9}{2} \right]$  ।

तदियगुणहाणिपढमसमयं  $\otimes$  णिसेगभागहारो पढमगुणहाणिपढमणिसेगभागहारस्स चउढभागो । कुदो ? तत्थतणलद्धादो एदस्स चउगुणत्तुवलंभादो । एवमसंखेज्जगुणहाणीओ भागहारं होदूण गच्छमाणीओ कम्मि उद्देसे जहण्णपरीतासंखेज्जमेत्तीओ होंति त्ति वृत्ते वृच्चदे-- जवमज्झादो हेट्ठिमकिच्चूणतिगुण्णोण्णभत्थरासिस्स जेतियाणि अद्धछेदणयाणि जहण्णपरीतासंखेज्जछेदणएहि अहियाणि  $\otimes$  तेत्तियमेत्तासु गुणहाणीसु चडिदासु तत्थियणिसेगस्स भागहारो

इस प्रकार जाकर द्वितीय दुगुणी वृद्धिके प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर वह जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंके भागहारके द्वितीय भागसे अपहृत होता है, क्योंकि, जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंकी अपेक्षा इस स्थानके जीव दुगुणे पाये जाते हैं । इसकी संदृष्टि--  $\frac{9}{2}$  । अब उसके अनन्तर योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर असंख्यात-गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । विशेष इतना है कि इससे अनन्तर पूर्वके अवहारकाससे इस समयका अवहारकाल विशेष हीन है । विशेषका प्रमाण क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । उसकी संदृष्टि--  $\frac{9}{2}$  है । द्वितीय गुणहानिके तृतीय निषेकके भागहारकी संदृष्टि  $\frac{9}{2}$  है । चतुर्थ निषेकके भागहारकी संदृष्टि  $\frac{9}{2}$  है ।

तृतीय गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार प्रथम गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण है, क्योंकि, वहाँके लब्धसे यहाँका लब्ध ( तृतीय गुणहानिका प्र. निषेक ) चौगुणा पाया जाता है । इस प्रकार असंख्यात गुणहानियां भागहार होकर जाती हुई किस स्थानमें जघन्य परीतासंख्यात मात्र होती हैं, ऐसा पूछने-पर उत्तर देते हैं- यवमध्यसे अधस्तन कुछ कम तिगुणी अन्योन्याभ्यस्त राशिके जितने-अर्धच्छेद जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे अधिक हों उतनी मात्र गुणहानियोंके चढने-

$\otimes$  प्रतिषु ' एत्थ तेणेव जीवाणं ' इति पाठः ।  $\otimes$  आप्रतो ' अवहिज्जमाणे ' इति पाठः ।  $\otimes$  अप्रतो ' को विसेसो विसेसहीणो ' इति पाठः ।  $\otimes$  आप्रतो ' पढमणिसेग ' इति पाठः ।  $\otimes$  मुप्रितप्रतो ' ऊगाणि ' इति पाठः ।

जहणपरित्तासंखेज्जगुणहाणिपमाणो होदि । एदम्हादो उवरिमगुणहाणिम्हि जहण-  
परित्तासंखेज्जस्स अद्दमेत्तीओ गुणहाणीओ भागहारो होदि । एवं गंतूण जवम-  
ज्जादो हेट्ठा चउत्थगुणहाणिपढमणिसेगभागहारो किंचूणअडदालगुणहाणिमेत्तो ।  
एवं चदुवीस-बारस-छग्गुणहाणीओ उवरिमगुणहाणिपढमणिसेगाणं भागहारो होदि  
त्ति वत्तव्वो ।

जवमज्जपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे देसूणतिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण  
कालेण अवहिरिज्जदि । तस्स संदिट्ठी |  $\frac{७}{५}$  | । संपहि तदणंतरजोगजीवपमाणेण  
सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे जवमज्जअवहारकालादो सादिरेणेण अवहिरिज्जदि ।  
तं जहा- जवमज्जभागहारं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि  
जवमज्जपमाणं पावेदि । पुणो हेट्ठा दोगुणहाणीओ विरलिय जवमज्जं समखंडं करिय  
दिण्णे हेट्ठिमविरलणरूवं पडि जवमज्जपक्खेवपमाणं पावेदि । पुणो एदम्म पक्खेवे  
उवरिमविरलणारूवधरिदसव्वजवमज्जेसु सोहिदे सेसं बिदियणिसेगपमाणं होदि ।

संपहि उवरिमविरलणमेत्तपक्खेवे पयदणिसेगपमाणेण कस्सामो- हेट्ठिमविरलण-

पर वहांके निषेकका भागहार जघन्य परीतासंख्यात गुणहानि प्रमाण होती है । इससे उपरिम  
गुणहानिमें जघन्य परीतासंख्यातकी आधी मात्र गुणहानियां भागहार होती हैं । इस प्रकार  
जाकर यवमध्यसे नीचे चतुर्थ गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार कुछ कम अडतालीस  
गुणहानि मात्र होता है । इस प्रकार चौबीस, बारह और छह गुणहानियां क्रमशः उपरिम  
गुणहानियोंके प्रथम निषेकोंका भागहार होता है, ऐसा कहना चाहिये ।

यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर कुछ कम तीन गुणहानिस्थानान्तर-  
कालसे वह अपहृत होता है । उसकी संदृष्टि  $१४२२ \div १२८ = ११ \frac{७}{८} = \frac{७१}{८}$  ।  
अब तदनन्तर योगस्थावर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर कुछ अधिक यवमध्यके  
अवहारकालसे अपहृत होता है । यथा - यवमध्यके भागहारका विरलन कर सब द्रव्यको  
समानखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर नीचे  
दो गुणहानियोंका विरलन कर यवमध्यको समानखण्ड करके देनेपर अधस्तन विरलनके  
प्रत्येक अंकके प्रति यवमध्यके प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस प्रक्षेपको उपरिम  
विरलनके अंकोंपर रखे हुए सब यवमध्योंमेंसे कम करनेपर द्वितीय निषेकका प्रमाण होता है ।

अब उपरिम विरलन मात्र प्रक्षेपोंको प्रकृत निषेकके प्रमाणसे करते हैं - एक

रूवूणमेत्तपक्खेवेसु समुदिदेसु\* जदि एगो पयदणित्सेगो एगा अवहारकालसलागा च लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तपक्खेवेसु किं लभामो त्ति रूवूणदोगुणहाणीहि जवमज्झभागहारे ओवट्ठिदे सादिरेयदिवड्ढुरुवाणि लब्भन्ति । ताणि उवरिमविरलणम्मि पक्खित्ते तदणन्तरउवरिमणित्सेगभागहारो होदि । तस्स संदिट्ठी | ७११ | ।

उवरि तदियणित्सेगभागहारे आणिज्जमाणे रूवूणगुणहाणीए जवमज्झभागहार-मोवट्ठिय लद्धं तत्थेवपक्खित्ते† तदियणित्सेगभागहारो होदि । तस्स संदिट्ठी | ७११ | ।

कम अधस्तन विरलन मात्र प्रक्षेपोंके समुदित होनेपर यदि एक प्रकृत निषेक और एक अवहारकालशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन मात्र प्रक्षेपोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार रूप कम दो गुणहानियोंसे यवमध्यके भागहारको अपवर्तित करनेपर कुछ अधिक डेढ रूप प्राप्त होते हैं । उन्हें उपरिम विरलनमें मिलानेपर उसके अनन्तर उपरिम निषेकका भागहार होता है । उसकी संदृष्टि १११ ।

विशेषार्थ— यवमध्यके भागहार १११ में एक कम दो गुणहानि आयाम ७ का भाग देनेपर १११/७ लब्ध आते हैं । पुनः १११/७ को यवमध्यके भागहार १११ में जोड़ देनेपर १११/७ यवमध्यके अगले निषेक ११२ के लानेके लिये भागहार होता है । यह उक्त कथनका तात्पर्य है । एक कम दो गुणहानि आयाम ७; यवमध्यभागहार १११;

$$\frac{111}{7} \div 7 = \frac{111}{49}; \frac{111}{7} + \frac{111}{49} = \frac{111 \times 7 + 111}{49} = \frac{111}{7} ।$$

आगे तृतीय निषेकके भागहारको लाते समय एक कम गुणहानिसे यवमध्यके भागहारको अपवर्तित कर लब्धको उसीमें मिला देनेपर तृतीय निषेकका भागहार होता है । उसकी संदृष्टि १११ है ।

उदाहरण— एक कम गुणहानि आयाम ३; यवमध्यभागहार १११ ।

$$\frac{111}{3} \div 3 = \frac{111}{9}; \frac{111}{3} + \frac{111}{9} = \frac{111 \times 3 + 111}{9} = \frac{111}{3} \text{ तृ. नि. का भागहार ।}$$

✿ मप्रतो 'समुदिदे' इति पाठः ।

✿ मप्रतावत्र 'तदियणित्सेगहारे अवणिज्जमाणे रूवूणगुणहाणीए जवमज्झभागहारमोवट्ठिय लद्धं तत्थेव पक्खित्ते' इत्यधिकः पाठः ।

उवरिमगुणहाणीं

पढम-बिदियणिसेगाणं

कमेण

भागहारसंविट्ठी

७११	७११	७११	७११	७११	७११	७११	७११	१४२२
३२	२८	१६	१४	८	७	४	७	

अधवा जवमज्झभागहारो संपुण्णतिण्णिगुणहाणिमेत्तो । सव्वदव्वं छत्तीसा-  
हियपण्णारससदमेत्तं त्ति मणेण संकप्पिय अवहारकालपरूवणा कीरदे । तं जहा-  
जवमज्झहेट्ठिमअण्णोण्णव्वत्थरासिणा तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु जहण्णजोगट्ठाण-  
जीवभागहारो होदि । तेण सव्वदव्वे भागे हिदे जहण्णजोगट्ठाणजीवा आगच्छंति ।  
एवं पुव्वविधाणेण णेदव्वं जाव जवमज्झे त्ति । पुणो तिण्णिगुणहाणीयो विरलेदूण  
सव्वदव्वेसु समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्झपमाणं पावेदि । पुणो एदस्स  
हेट्ठा दोगुणहाणीयो विरलिय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पक्खेव-  
पमाणं होदि । तम्म उवरिमविरलणजवमज्झेसु पादेवकमवणिदे सेसा तिण्णिगुण-  
हाणिमेत्तबिदियणिसेगा चेत्ठंति । तिण्णिगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु रूवूणदोगुणहाणि-  
मेत्तपक्खेवेसु समुदिदेसु एगो पयदणिसेगो होदि च एगा अवहारकालसलागा लब्भदि ।

आगेकी गुणहानियोंके प्रथम व द्वितीय निषेकके भागहारोंकी संदृष्टि- द्वि. गुण.  
प्र. नि.  $\frac{711}{32}$ ; द्वि. नि.  $\frac{711}{28}$  । तृ. गु. प्र. नि.  $\frac{711}{16}$ ; द्वि. नि.  $\frac{711}{14}$  । च. गु. प्र. नि.  
 $\frac{711}{8}$ ; द्वि. नि.  $\frac{711}{7}$  । पं. गु. प्र. नि.  $\frac{711}{4}$  द्वि. नि.  $\frac{1422}{7}$  है ।

अथवा यवमध्यका भागहार पूरा तीन गुणहानि प्रमाण है । सब द्रव्य पन्द्रह सौ  
छत्तीस है, ऐसी मनमं कल्पना करके अवहारकालकी प्ररूपणा करते हैं । यथा यवमध्यकी  
अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको अर्थात् तीन गुणहानियोंके कालको गुणित  
करनेपर जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंका भागहार { ( ४×३ ) × ८ = ९६ } होता है । उसका  
सब द्रव्यमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आता है ( १५३६ ÷ ९६ = १६ ) ।  
इस प्रकार पूर्व विधानके अनुसार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

पुनः तीन गुणहानियोंका विरलन कर सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके  
एक अंकके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसके नीचे दो गुणहानि-  
योंका विरलन कर यवमध्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति  
प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । उसको उपरिम विरलनके प्रत्येक यवमध्योंमेंसे कम करने-  
पर शेष तीन गुणहानि मात्र द्वितीय निषेक रहते हैं । तीन गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंमेंसे  
एक कम दो गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंके मिलानेपर एक प्रकृत निषेक होता है और एक अव-



तदियणिसेगपमाणेणावहिरिज्जमाणे पक्खेवरूवगवेसणा कीरदे- तिण्णिगुण-  
हाणि आयद-जवमज्जविकखंभखेत्तम्मि दोपक्खेवविकखंभ-तिण्णिगुणहाणिआयदखेत्तमु-  
वरिमभागे तच्छेदूण अवणिदे सेसं तदियणिसेगपमाणं होदि । अवणिदफालि पक्खेव-  
विकखंभेण फालिय आयामेण ढोइदे पक्खेवविकखंभ-छगुणहाणिआयदखेत्तं होदि ।  
तत्थ दुरूवूणदोगुणहाणिमेत्तपक्खेवेहि पयदगोवुच्छा होदि त्ति छपक्खेवाहियतिण्णि-  
पक्खेवरूवाणि लब्भंति । पुणो अट्टपक्खेवूणदोगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु संतेसु चउत्थपक्खे-  
वरूवमुप्पज्जदि । ण च एत्तियमत्थि, तदो एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेण-  
भहियतिण्णिरूवाणि पक्खेवो होदि । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ--

फालिसलागब्भहियाणुवरिदरूवाण जत्तिया संखा ।

तत्तियपक्खेवूणा गुणहाणीरूवजणणट्ठ ॥ ६ ॥

ओजम्मि फालिसंखे गुणहाणी रूवसंजुआ अहिया ।

सुद्धा रूवा अहिया फाली संखम्मि जुम्मम्मि ॥ ७ ॥

मात्र प्रक्षेप शेष रहते हैं । इनमेंसे ७ प्रक्षेपोंका एक निषेक होता है तथा शेष ५ प्रक्षेप रहते हैं । इसलिये यहां द्वितीय निषेकका द्रव्य लानेके लिये १३ $\frac{१}{३}$  लिया गया है ।

अब तृतीय निषेकके प्रमाणसे भाजित करनेपर भागहारमें कितने प्रक्षेप अंक प्राप्त होते हैं, इसका विचार करते हैं- तीन गुणहानि प्रमाण लम्बे और यवमध्य प्रमाण चौड़े क्षेत्रमेंसे दो प्रक्षेप प्रमाण चौड़े और तीन गुणहानि प्रमाण लम्बे क्षेत्रको उपरिम भागकी ओरसे छीलकर पृथक् कर देनेपर शेष तृतीय निषेक प्रमाण चौड़ा क्षेत्र प्राप्त होता है । निकाली हुई फालिकी एक प्रक्षेपकी चौड़ाईमें फाडकर लम्बाईमें जोड देनेपर एक प्रक्षेप प्रमाण चौड़ा और छह गुणहानि प्रमाण लम्बा क्षेत्र होता है । यहां दो कम दो गुण-  
हानि मात्र प्रक्षेपोंकी एक प्रकृत गोपुच्छा होती है, इसलिये छह प्रक्षेप अधिक भागहारमें मिलानेके लिये तीन प्रक्षेप अंक प्राप्त होते हैं । आठ प्रक्षेप कम दो गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंके होनेपर भागहारमें मिलानेके लिये चौथा प्रक्षेप अंक प्राप्त होता है । पर इतना है नहीं इसलिये भागहारमें मिलानेके लिये एकका असंख्यातवां भाग अधिक तीन अंक प्रमाण प्रक्षेप होता है । यहां उपयोगी पडनेवाली गाथायें ये हैं--

फालिशलाकाओंसे अधिक पूर्ववर्ती अंकोंकी जितनी संख्या हो, गुणहानिके स्थानोंको उत्पन्न करनेके लिये उतने प्रक्षेप कम करने चाहिये ॥ ६ ॥

फालियोंकी ओज अर्थात् विषम संख्याके होनेपर गुणहानिमें एक मिलानेपर अधिक स्थान आता है, एक जोडनेपर अधिक गुणहानि आती है, और फालियोंकी सम संख्याके होनेपर शून्य जोडनेपर अधिक गुणहानि आती है ॥ ७ ॥

तिण्णं दलेण गुणिदा फालिसलागा हवंति सब्वत्थ ।  
 फालि पडि जाणेज्जो साहू पक्खेवरूवाणि ॥ ८ ॥  
 फालीसंखं तिगुणिय अद्धं काऊण सगलरूवाणि ।  
 पुणरवि फालीहि गुणे विसेससंखाणमेदि फुडं ❀ ॥ ९ ॥  
 रूवूणिच्छागुणिदं पचयं सादिं गुणेउ फालीहि ।  
 तिण्णेगादितिउत्तरविसेससंखाणमेदि फुडं ❀ ॥ १० ॥

एवं तिण्ण-चत्तारि-पंचादिफालीओ अवणेदूणिच्छिदजोगट्टाणजीवपमाणेण कादूण णेदव्वं जाव जवमज्झजीवगुणहाणीए अद्धे गदे त्ति ।

पुणो तदित्थजोगजीवपमाणेण सगदव्वे अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणि-ट्टाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा- जीवजवमज्झावो तदित्थजोगणिसेगो चदुब्भागूणो होदि त्ति पुव्विल्लखेत्तं चत्तारिफालीओ कादूण तत्थेगफालिमवणिदे सेसक्खेत्तं जीवजवमज्झतिण्णचदुब्भागविकखंभेण तिण्णिगुणहाणिआयामेण चेदुदि । अवणिदफाली वि जवमज्झचदुब्भागविकखंभा तिण्णिगुणहाणिआयामा । पुणो एदमायामेण तिण्णि खंडाणि कादूण एदाणि तिण्णि

तीनके आधेसे गुणा करनेपर सर्वत्र फालिकी शलाकायें होतीं हैं । और प्रत्येक फालिके प्रति प्रक्षेप रूपोंको भले प्रकार जान लेना चाहिये (?) ॥ ८ ॥

फालियोंकी संख्याको तिगुणा कर फिर आधा करनेपर जो समस्त अंक प्राप्त होते हैं उन्हे फिर भी फालियोंकी संख्यामे गुणित करनेपर स्पष्ट रूपसे विशेषोंकी संख्या आती है (?) ॥ ९ ॥

एक कम इच्छाराशिसे गुणित प्रचयको पुनः फालियोंकी संख्यासे गुणा करनेपर स्पष्ट रूपसे तीन एक आदि तीनोत्तर विशेषोंकी संख्या आती है (?) ॥ १० ॥

इस प्रकार तीन, चार, पांच आदि फालियोंको अलग कर इच्छित योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे करते हुए यवमध्य जीवगुणहानिका अर्ध भाग वीतने तक ले जाना चाहिये ।

पुनः वहांके योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे योगस्थानके द्रव्यके अपहृत करनेपर वह चार गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा- जीवमध्यसे चूकि वहांका योगनिषेक चौथा भाग कम है अतः पूर्व क्षेत्रकी चार फालियां करके उनमेंसे एक फालिको कम कर देनेपर शेष क्षेत्र जीवयवमध्यका तीन बटे चार भाग प्रमाण चौडा और तीन गुणहानि प्रमाण लम्बा स्थित होता है । अलग की गई हुई फालि भी यवमध्यके चतुर्थ भाग प्रमाण चौडी और तीन गुणहानि आयामवाली होती है । पुनः इस निकाली हुई फालिके आयामकी आंरसे तीन खण्ड करके यवमध्यके चतुर्थ भाग प्रमाण चौडे और

वि खंडाणि जवमज्झचदुग्गभागविवक्खंभाणि गुणहाणिदीहाणि घेतूण दक्खिणदिसाए परिवाडीए<sup>१</sup> तिसु खंडेसु ढोइदे चत्तारिगुणहाणिआयामं पयदणिसेगविवक्खंभखेतं जेण होदि तेण चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि त्ति उत्तं ।

पंचगुणहाणिमेत्तभागहारे उप्पाइज्जमाणे अट्टाइज्जखंडाणि जवमज्झं कादूण तत्थेगखंडे अवणिदे सेसमिच्छिदखेतं होदि । अवणिदेगखंडम्मि अट्टाइज्जदिमभाग-विवक्खंभ-दोगुणहाणिआयदखेतं घेतूण विवक्खंभं विवक्खंभेण आइय पढमखंडे ढोइदे पंचगुणहाणीओ आयामो होदि । सेसखंडं मज्झम्मि फाडिय विवक्खंभं विवक्खंभम्मि ढोइय ट्ठविदे पंचभागविवक्खंभ-दोगुणहाणिआयदं खेतं होदि । एदमुच्चाइदूण पंचम-भागं पंचमभागम्मि आइय पासे ढोइदे एत्थ वि पंचमगुणहाणीओ आयामो होदि । तेणेत्य पंचगुणहाणीयो भागहारो । एवमण्णत्थ वि मिस्समइविप्फारणट्ठं भाग-हारपरूवणा कायव्वा । एत्थ उवउज्जंती गाहा—

इच्छहिदायामेण य रूवजुदेणवहरेज्ज विक्खंभं ।

लद्धं दीहत्तजुदं इच्छिदहारो हवइ एव ॥ ११ ॥

गुणहानि प्रमाण लम्बे इन तीनों ही खण्डोंको ग्रहण कर दक्षिण दिशामें परिपाटीसे पूर्वोक्त तीन खण्डोंमें मिलानेपर यतः चार गुणहानि प्रमाण लम्बा व प्रकृत निषेक प्रमाण चौडा क्षेत्र होता है, अतः 'चार गुणहानिस्थानान्तरकालमे विवक्षित योगस्थानका द्रव्य अपहृत होता है,' ऐसा कहा है ।

पांच गुणहानि मात्र भागहारके उत्पन्न कराते समय यवमध्यके अढाई खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डको अलग कर देनेपर शेष इच्छित क्षेत्र होता है । अलग किये हुए एक खण्डमेंसे अढाईवें भाग विस्तृत और दो गुणहानि आयत क्षेत्रको ग्रहण कर विस्तारको विस्तारके साथ मिलाकर प्रथम खण्डमें मिला देनेपर पांच गुणहानियां आयाम होता है । शेष खण्डको मध्यमें फाडकर विस्तारको विस्तारमें मिलाकर स्थापित करनेपर पांचवां भाग विस्तृत और दो गुणहानि आयत क्षेत्र होता है । फिर इसे उठा कर पांचवें भागको पांचवें भागके पास लाकर पार्श्व भागमें मिलानेपर यहां भी पांच गुणहानियां आयाम होता है । इस कारण यहां पांच गुणहानियां भागहार हैं । इसी प्रकार अन्यत्र भी शिष्योंकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । यहां उपयुक्त गाथा—

रूपाधिक इच्छित आयामसे विस्तारको अपहृत करना चाहिये । ऐसा करनेसे जो लब्ध हो उसमें दीर्घताको मिलानेपर इच्छित भागहार होता है ॥ ११ ॥

एवं णेदम्बं जाव गुणहाणिअद्धानं समत्तं ति ।

विदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण अवहिरिज्जमाणे छगुणहाणीयो भागहारो होदि । पुव्विल्लखेत्तं मज्झम्मि फालिय ३ पासम्मि ढोइदे जवमज्झद्द ॐ विक्खंभ-छगुणहाणिआयदखेत्तुप्पत्तीदो, एगुणहाणिं चडिदो ति एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णेण्णगुणिदरासिणा तिण्णिगुणहाणीयो गुणिदे छगुणहाणिसमुप्पत्तीदो वा । एदिस्से वि गुणहाणीए पुव्वं परूविदगणिद ३ किरिया सिस्समइविप्फारणट्ठं सव्वा परूवेदव्वा ।

उवरिमगुणहाणिपढमणिसेयस्स बारहगुणहाणीयो भागहारो होदि, जवमज्झ-विक्खंभं चत्तारिफालीयो काऊण पासे ३ ढोइदे बारसगुणहाणिसमुप्पत्तीदो, दोगुणहा-णीयो चडिदो ति दो रूआणि विरलिय बिगुणिय अण्णेण्णभत्थरासिणा तिण्णिगुण-हाणीयो गुणिदे बारसगुणहाणिसमुप्पत्तीदो वा । उवरि सादिरेयबारसगुणहाणीयो भागहारो होदि ।

उदाहरण— इच्छित आयाम ३ गुणहानि; विष्कम्भ ८ प्रक्षेप;  $३+१ = ४$ ;  
 $८÷४ = २$ ;  $३+२ = ५$  गुणहानि, इच्छित द्रव्यका अवहारकाल ।

इस प्रकार गुणहानिके सब स्थानोंके समाप्त होने तक जानना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेकके प्रमाणसे अपहृत करनेपर छह गुणहानियां भागहार होता है, क्योंकि, पहलेके क्षेत्रको मध्यमें फाडकर पार्श्व भागमें मिलानेपर यवमध्यसे अर्धभाग प्रमाण विस्तृत और छह गुणहानि आयत क्षेत्र उत्पन्न होता है, अथवा एक गुणहानि आगे गये हैं इसलिये एक रूपका विरलन करके दुगुणित कर अन्योन्यगुणित राशिसे तीन गुणहानियोंके गुणा करनेपर छह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं । शिष्योंकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये इस गुणहानिकी भी पूर्वमें कही गई गणित-प्रक्रिया सब कहना चाहिये ।

इससे आगेकी गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार बारह गुणहानियां हैं, क्योंकि, यवमध्य प्रमाण विस्तृत क्षेत्रकी चार फालियां करके पार्श्व भागमें मिलानेपर बारह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं, अथवा दो गुणहानियां आगे गये हैं इसलिये दो संख्याका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर बारह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं । आगे साधिक बारह गुणहानियां भागहार हैं ।

☉ सप्तती ' फोडिय ' इति पाठः ।

☺ प्रतिषु ' जवमज्झद्वविक्खंभ ' इति पाठः ।

☻ सप्तती ' परूविदगुणिद- ' इति पाठः ।

☼ प्रतिषु ' फासे ' इति पाठः ।

उवरिमगुणहाणिपढमणिसेगस्स चउवीसगुणहाणीओ भागहारो होदि, पुढवखेतस्स विक्खंभमट्खंडाणि काऊण तत्थ सत्त खंडाणि आयामेण ढोइदे (चउवीसगुणहाणि-समुप्पत्तीदो । ) तिगुणहाणीओ चडिदो त्ति तिण्णमण्णोण्णभत्थरासिणा तिण्णि-गुणहाणीओ गुणिदे चउवीसगुणहाणिसमुप्पत्तीदो वा । एवं जत्तिय-जत्तियगुणहाणीओ उवरि चडिदूण भागहारो इच्छिज्जदि तत्तिय-तत्तियमेत्तीओ गुणहाणिसलागाओ विर-लिय बिगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे तेणेव रासिणा जवमज्झविक्खंभं खंडिय पासे ढोइदे वि तदित्थ-तदित्थअवहारकालादो होदि त्ति दट्ठव्वं । एवमणेण विहाणेण णेदव्वं जाव दुरूव्वणजहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणयमेत्तीओ गुणहाणीओ उवरि चडिदाओ त्ति । एवमुवरि वि णेदव्वं । णवरि एत्तो उवरिमगुणहाणीसु सव्वत्थ असंखेज्जगुणहाणीओ अवहारकालो होदि । उक्कस्स-जोगजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणीओ अवहारो होदि, जवमज्झुवरिमसव्वगुणहाणिसलागाओ विरलिय दुगुणिय अण्णोण्णभत्थरासिणा किंचूणेण तिण्णिगुणहाणीसु गुणिदासु उक्कस्सजोगजीवभागहारुप्पत्तीदो ।

इससे आगेकी गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार चौबीस गुणहानियां होती हैं, क्योंकि, पूर्व क्षेत्रके विष्कम्भके आठ खण्ड करके उनमें सात खण्डोंको आयामसे मिला देनेपर ( चौबीस गुणहानियां उत्पन्न होती हैं ) । अथवा, तीन गुणहानियां आगे गये हैं, इसलिये तीनकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर चौबीस गुणहानियां उत्पन्न होती हैं ।

इस प्रकार जितनी जितनी गुणहानियां आगे जाकर भागहार इच्छित हो उतनी उतनी मात्र गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर अथवा उसी राशिसे यवमध्यके विस्तारको खण्डित करके पार्श्वभागमें मिला देनेपर भी वहांका अवहारकाल होता है, ऐसा जानना चाहिये । इस प्रकार इस विधानसे रूप कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियां आगे जाने तक यह क्रम जानना चाहिये । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये । विशेष इतना है कि इससे आगेकी गुणहानियोंमें सर्वत्र असंख्यात गुणहानियां अवहार काल होती हैं ।

उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर असंख्यात गुणहानियां अवहारकाल होती हैं, क्योंकि, यवमध्यके आगेकी सब गुणहानिशला-काओंका विरलन करके दुगुणित कर कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर उत्कृष्ट योगजीवभागहार उत्पन्न होता है ।

उदाहरण— उपरिम गुणहानियां ५ ;

$$\begin{array}{cccccc} २ & २ & २ & २ & २ & = ३२; \text{ कुछ कम अन्यो. } \frac{१२८}{६} \end{array}$$

$$\frac{१२८}{६} \times \frac{१२}{१} = \frac{१५३६}{६} \text{ उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंकी संख्या लानेके लिये भागहार ।}$$

भागाभागो वुच्चदे— जवमज्झजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखे-  
ज्जदिभागो । को पडिभागो ? तिण्णिगुणहाणीओ । जहण्णजोगट्टाणजीवा सव्वजी-  
वेहिओ केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । उक्कस्सजोगट्टाणजीवा सव्वजीवाणं  
केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं ।

अप्पाबहुगं तिविहं— जवमज्झादो हेट्ठा उवरि उभयत्थप्पाबहुगं चेदि । तत्थ  
सव्वत्थोवा जहण्णजोगट्टाणजीवा । १६ । । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा । को गुण-  
गारो ? जवमज्झहेट्ठिमसव्वगुणहाणिसलागाणमण्णोण्णव्वत्थरासी पलिदोवमस्स  
असंखेज्जदिभागमेत्तो । १२८ । । जवमज्झादो हेट्ठिमा जहण्णजोगट्टाणादो उवरिमा  
जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किच्चूणदिबड्डुगुणहाणीओ सेडीए असंखे-  
ज्जदिभागो । तस्स संदिट्ठी  $\left| \frac{७९}{१६} \right|$  । एदेण जवमज्झं गुणिदे हेट्ठिमसव्वजीव-  
पमाणं होदि । ६०० । । जवमज्झादो हेट्ठा सव्वजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
जहण्णजोगजीवमेत्तेण । ६१६ । । अजहण्णए जोगट्टाणे जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
जहण्णजोगजीवपमाणजवमज्झजीवमेत्तेण । ७२८ । । जवमज्झप्पहुडिहेट्ठिमसव्व—

अब भागाभागका कथन करते हैं— यवमध्यके जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग-  
प्रमाण हैं ? असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग तीन गुणहानियां  
हैं । जघन्य योगस्थानके जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? असंख्यातवें भाग  
प्रमाण हैं । उत्कृष्ट योगस्थानके जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? सब जीवोंके  
असंख्यातवें भाग प्रमाण है । इसी प्रकार सर्वत्र कहना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है— यवमध्यसे अधस्तन अल्पबहुत्व, उपरिम अल्प-  
बहुत्व और उभयत्र अल्पबहुत्व । उनमें जघन्य योगस्थानके जीव सबसे स्तोका हैं ( १६ ) ।  
उनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यवमध्यसे अधस्तन सब  
गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पत्योपमके असंख्यातवें  
भाग मात्र है ( १२८ यवमध्यके जीव ) । यवमध्यसे अधस्तन और जघन्य योगस्थानसे  
उपरिम जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ गुणहानियां गुणकार हैं  
जो कि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसकी संदृष्टि  $\frac{७९}{१६}$  है । इससे यवमध्यको  
गुणित करनेपर अधस्तन सब जीवोंका प्रमाण होता है—  $\frac{७९}{१६} \times १२८ = ६००$  । उससे  
यवमध्यसे अधस्तन सब जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? जघन्य योगस्थानके  
जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $६०० + १६ = ६१६$  । उनसे अजघन्य योगस्थानमें  
स्थित जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? यवमध्यके जीवोंकी संख्यामेंसे जघन्य  
योगस्थानके जीवोंकी संख्या कम कर देनेपर जितना प्रमाण शेष रहे उतने अधिक हैं  
 $६१६ + (१२८ - १६) = ७२८$  । उनकी अपेक्षा यवमध्यसे लेकर अधस्तन सब जीव विशेष अधिक

जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णजोगजीवमेत्तेण । ६४४ ।

जवमज्झादो उवरि अप्पाबहुगं वुच्चदे । तं जहा— सव्वत्थोवा उक्कस्सए जोगट्टाणे जीवा । ५ । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जवमज्झ— उवरिमसव्वगुणहाणिसलागाणं किंचूणण्णोण्णभत्थरासी पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि- भागो ॐ । तस्स संबिट्ठी । १२८ । एदेण उक्कस्सजोगजीवे गुणिदे जवमज्झजीवप- माणं होदि । १२८ । जवमज्झादो उवरि उक्कस्सजोगट्टाणादो हेट्टा जीवा असंखेज्ज- गुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्डुगुणहाणीयो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । तासिं ॐ संबिट्ठी एसा । ६७३ । एदेण जवमज्झे गुणिदे अप्पिददव्वं होदि । ६७३ । जवमज्झस्सुवरिमजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण । ६७८ । अणुक्कस्सजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवपमाणजवम- ज्झमेत्तेण । ८०१ । जवमज्झप्पहुड्डिमुवरिमसव्वजोगजीवा विसेसाहिया । केत्तिय- मेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण । ८०६ ।

है । कितने अधिक हैं ? जघन्य योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $७२८ + १६ = ७४४$  ।

अब यवमध्यसे आगेके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा— उत्कृष्ट योग- स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं ( ५ ) । इनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यवमध्यसे उपरिम सब गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । उसकी संदृष्टि— १२८ है । इससे उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण होता है ।  $\frac{१२८ \times ५}{५} = १२८$  । इनसे यवमध्यसे आगेके और उत्कृष्ट योगस्थानसे पीछेके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ गुणहानियां गुणकार हैं जो कि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । उनकी संदृष्टि यह है—  $\frac{६७३}{२}$  । इससे यव- मध्यको गुणित करनेपर विवक्षित द्रव्यका प्रमाण होता है  $\frac{६७३ \times १२८}{१२८} = ६७३$  । इनसे यवमध्यसे आगेके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $६३ + ७५ = ६७८$  । अनुत्कृष्ट योगस्थानके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे हीन यव- मध्यके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $६७८ + (१२८ - ५) = ८०१$  । इनसे यवमध्यको लेकर आगेके सब योगस्थानोंके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $८०१ + ५ = ८०६$  ।

ॐ आ प्रती ' असंखेज्जअसंखेज्जदिभागो ' इति पाठः । ॐ प्रतिषु ' ताओ ' इति पाठः ।

ॐ आ प्रती ' जीवूण ' इति पाठः । अ प्रती ' जीवपमाणजव ' इति पाठः ।

जवमज्झादो हेट्ठुवरिमाणमप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवा उक्कस्सए जोगट्ठाणए जीवा । जहण्णए जोगट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जहण्णजोगट्ठाणसरिसस उवरिमजीवाणं उवरिमसव्वगुणहाणिसलागाणं किंचूणणोण्णभत्थरासी पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । तिस्से संदिट्ठी एसा  $\frac{१६}{६}$  । एदेण उक्कस्सजोगजीवेसु गुणिदेसु जहण्णजोगजीवा होंति । १६ । । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जहण्णजोगसरिसजीवाणं हेट्ठा जवमज्झजीवाणमुवरि सव्वगुणहाणिसलागाणमणोण्णभत्थरासी पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागा । तिस्से संदिट्ठी । ८ । । एदेण जहण्णजोगजीवेसु गुणिदेसु जवमज्झजीवा होंति । १२८ । । जवमज्झादो हेट्ठा जहण्णजोगादो उवरिमजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्डुगुणहाणीओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ  $\frac{७६}{६}$  । एदेण जवमज्झं (गुणिदे) अप्पिददव्वं होदि । ६०० । । जवमज्झादो हेट्ठिमजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णजोगजीवमेत्तेण । ६१६ । । जवमज्झादो उवरिमउक्कस्सजोगादो हेट्ठिमजीवा

अब यवमध्यसे अधस्तन और उपरिम योगस्थानोंके अल्पबहुत्वको कहते है । यथा— उत्कृष्ट योगस्थानके जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे जघन्य योगस्थानमें जीव असंख्यातगुणे है । गुणकार क्या है ? जघन्य योगस्थान सदृश उपरिम जीवोंकी उपरिम सब गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसकी संदृष्टि यह है  $\frac{१६}{६}$  । इससे उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंको गुणित करनेपर जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है  $\frac{१६ \times ९}{६} = १६$  । इनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जघन्य योगस्थानके सदृश जीवोंकी नीचेकी और यवमध्यके जीवोंकी ऊपरकी सब गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसकी संदृष्टि ८ है । इससे जघन्य योगस्थानके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीव होते हैं  $१६ \times ८ = १२८$  । इनसे यवमध्यसे नीचेके और जघन्य योगसे आगेके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ गुणहानियां गुणकार हैं जो कि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं  $\frac{७६}{६}$  । इससे यवमध्यको (गुणित करनेपर) विवक्षित द्रव्यका प्रमाण होता है  $\frac{७६}{६} \times १२८ = ६००$  । इनसे यवमध्यसे नीचेके जीव विशेष अधिक है । कितने अधिक हैं ? जघन्य योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $६०० + १६ = ६१६$  । इनसे यवमध्यसे आगेके और उत्कृष्ट योगसे नीचेके जीव विशेष अधिक हैं । कितने

विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णुक्कस्सजोगजीवविरहिद\*अन्तिमदोगुणहाणि-  
दव्वमेत्तेण । ६७३ । । जवमज्झादो उवरिमजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण । ६७८ । । अणुक्कस्सजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
उक्कस्सजोगजीवूणजवमज्झमेत्तेण । ८०१ । । जवमज्झप्पहुंडि उवरि सव्वजोगजीवा  
विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण । ८०६ । । सव्वजोगट्ठाण-  
जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जवमज्झादो हेट्ठिमजीवमेत्तेण । १४२२ । ।

तदो जीवजवमज्झहेट्ठिमअट्ठाणादो उवरिमअट्ठाणं विसेसाहियमिदि सिद्धं ।  
तेणेत्थ अंतोमुहुत्तकालमच्छणसंभवो णत्थि त्ति कालजवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्त-  
द्धमच्छिदो त्ति घेतव्वं ।

**चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जविभाग-  
मच्छिदो ॥ २९ ॥**

अधिक हैं ? जघन्य और उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंसे रहित अन्तकी दो गुणहानियोंके  
द्रव्यका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $६१६ + ७८ - २१ = ६७३$  । इनसे यवमध्यसे  
आगेके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना  
प्रमाण है उतने अधिक हैं  $६७३ + ५ = ६७८$  । इनसे अनुत्कृष्ट जीव विशेष अधिक हैं ।  
कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंसे रहित यवमध्यके जीवोंका जितना प्रमाण  
है उतने अधिक हैं  $६७८ + (१२८ - ५) = ८०१$  । इनसे यवमध्यसे लेकर आगेके सब  
योगस्थानोंके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका  
जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं  $८०१ + ५ = ८०६$  । सब योगस्थानके जीव विशेष  
अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? यवमध्यके नीचेके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक  
हैं  $८०६ + ६१६ = १४२२$  ।

इसलिये जीवयवमध्यसे नीचेके स्थानसे आगेका स्थान विशेष अधिक है, यह  
सिद्ध हुआ । अत एव यहां चूकि अन्तर्मुहूर्त काल रहना सम्भव नहीं है इसीलिये काल-  
यवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ— यहां यवमध्यसे जीवयवमध्यका ग्रहण होता है या कालयवमध्यका ?  
इसी प्रश्नका निर्णय कर यह बतलाया गया है कि प्रकृतमें यवमध्य पदसे कालयवमध्यका  
ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, जीवयवमध्यके उपरिम भागमें अन्तर्मुहूर्त काल तक  
रहना सम्भव नहीं है ।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भाग काल तक रहा । २९ ।

चरिमजीवदुगुणवड्ढीए अंतोमुहुत्तं किण्ण अच्छिदो ? ण, तत्थ असंखेज्जगु-  
णवड्ढिहाणीणमभावादो । ण च एदाहि वड्ढि-हाणीहि विणा अंतोमुहुत्तद्धमच्छदि, 'असं-  
खेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढीणं एदासि हाणीणं च कालो  
जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ' त्ति वयणादो ।  
चरिमजीवदुगुणवड्ढीए पुण असंखेज्जदिभागवड्ढि-हाणीओ चेव, ण सेसाओ ।  
तेण तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागं चेव अच्छदि त्ति णिच्छओ कायव्वो । तत्थ  
असंखेज्जभागवड्ढि-हाणीयो चेव अत्थि, अण्णाओ णत्थि त्ति कधं णव्वदे? जुत्तीदो ।  
तं जहा- बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्टाणमादि कादूण पक्खेवुत्तरकमेण  
जोगट्टाणाणि वड्ढुमाणाणि गच्छंति जाव पक्खेवूणदुगुणजोगट्टाणे त्ति । पुणो तस्सु-  
वरि एगपक्खेवे वड्ढिदे हेट्ठिमदुगुणवड्ढिदद्धाणादो दुगुणमद्व्वाणं गंतूण एत्थतणपढ-  
मदुगुणवड्ढी जादा । एवं दुगुण-दुगुणमद्व्वाणं गंतूण सव्वदुगुणवड्ढीयो उप्पज्जंति जाव

शंका- अन्तिम जीवदुगुणवृद्धिमें अन्तर्मुहूर्त काल तक क्यों नहीं रहा ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, वहां असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि नहीं  
पाई जाती । यदि कहा जाय कि असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिके बिना भी  
अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, " असंख्यातभागवृद्धि  
संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिका तथा इन्हीं तीन हानियोंका जघन्य काल एक समय  
है और उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है " ऐसा वचन है । पर अन्तिम  
जीवदुगुणवृद्धिमें असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि ये दो ही होती हैं, शेष  
वृद्धि-हानियां वहां नहीं होती । इसलिये वहां आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक  
ही रहता है, ऐसा निश्चय करना चाहिये ।

शंका- वहां असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि ही होती है, अन्य  
वृद्धि-हानियां नहीं होती; यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- यह बात युक्तिसे जानी जाती है । यथा- द्वीन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य  
परिणाम योगस्थानसे लेकर एक एक प्रक्षेप-अधिकके क्रमसे योगस्थान एक प्रक्षेप कम  
दुगुणे योगस्थानके प्राप्त होने तक बढ़ते हुए चले जाते हैं । पुनः उसके ऊपर एक  
प्रक्षेपके बढ़नेपर अधस्तन दुगुणवृद्धि स्थानसे दुगुणा स्थान जाकर यहांकी प्रथम  
दुगुणवृद्धि हो जाती है । इस प्रकार दुगुणे दुगुणे स्थान जाकर अन्तिम दुगुणवृद्धिके

चरिमदुगुण\*वड्डिपढमजोगो त्ति । संपधि चरिमगुणवड्ढीए हेट्टिमसव्वगुणहाणिसला-  
गाओ विरलिय बिगुणिय अण्णोण्णढ्ढामुप्पण्णरासिणा बेइदियपज्जत्तजहण्णपरिणाम-  
जोगट्टाणपक्खेवभागहारे गुणिदे चरिमजोगदुगुणहाणिपढमजोगट्टाणपक्खेवभागहारे  
होदि । तं विरलेदूण चरिमदुगुणवड्डिपढमजोगट्टाणं समखंडं कादूण दिण्णे विरलण-  
रूवं पडि एगेगपक्खेवो पावदि । तत्थेगपक्खेवे तस्सुवरि वड्डिदे असंखेज्जभागवड्ढी  
होदि । पुणो बिदियपक्खेवे वड्डिदे वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदूण ताव गच्छदि  
जाव एवम्मि पक्खेवभागहारं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे तत्थ रूवूणेगखंडमेत्तपक्खेवा  
पविट्ठा त्ति । पुणो तस्सुवरि एगपक्खेवे वड्डिदे संखेज्जभागवड्ढी पारभदि । पुणो  
तस्सुवरि अण्णेगपक्खेवे वड्डिदे वि संखेज्जभागवड्ढी चेव । एवं दो-तिण्णि-चत्तारि  
आदि जाव रूवूणपक्खेवभागहारमेत्तपक्खेवा पविट्ठा त्ति । पुणो चरिमपक्खेवे पविट्ठे  
दुगुणवड्ढी होदि । एवं चरिमगुणहाणीए तिण्णि चेव वड्ढीयो ।

संपधि पुठ्वभागहारमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थेगखंडमेत्तपक्खेवेसु  
पविट्ठेसु जं जोगट्टाणं तमाधारं कादूण वड्डिगवेसणा कीरदे । तं जहा- अद्वजोग-

प्रथम योगस्थानके प्राप्त होने तक सब दुगुणवृद्धियां उत्पन्न होती हैं । अब अन्तिम गुणवृद्धिके  
नीचेकी सब गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और उसे द्विगुणित कर जो अन्योन्याभ्यस्त-  
राशि उत्पन्न होती है उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य परिणाम योगस्थान सम्बन्धी  
प्रक्षेपभागहारको गुणित करनेपर अन्तिम योग सम्बन्धी दुगुणहानिके प्रथम योगस्थानका  
प्रक्षेपभागहार होता है । उसका विरलन कर अन्तिम दुगुणवृद्धिके प्रथम योगस्थानको  
समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्रति एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । उनमेंसे एक  
प्रक्षेप उसके ऊपर बढ़ानेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है । फिर द्वितीय प्रक्षेपके बढ़ानेपर  
भी असंख्यातभागवृद्धि ही होकर तब तक जाती है जब तक इसमें प्रक्षेपभागहारको  
उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक कम एक खण्ड मात्र प्रक्षेप प्रविष्ट न हो  
जावें । पुनः उसके ऊपर एक प्रक्षेपके बढ़ानेपर संख्यातभागवृद्धि प्रारम्भ होती है ।  
तत्पश्चात् उसके ऊपर अन्य एक प्रक्षेपके बढ़ानेपर भी संख्यातभागवृद्धि ही होती है ।  
इस प्रकार दो, तीन, चार आदि एक कम प्रक्षेपभागहार प्रमाण प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक  
संख्यातभागवृद्धि ही होती है । पुनः अन्तिम प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर दुगुणवृद्धि होती  
है । इस प्रकार अन्तिम गुणहानिमें तीन ही वृद्धियां होती हैं ।

अब पूर्व भागहारके उत्कृष्ट संख्यात मात्र खण्ड करके उनमेंसे एक खण्ड मात्र  
प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर जो योगस्थान हो उसको आधार करके वृद्धिका विचार करते हैं ।